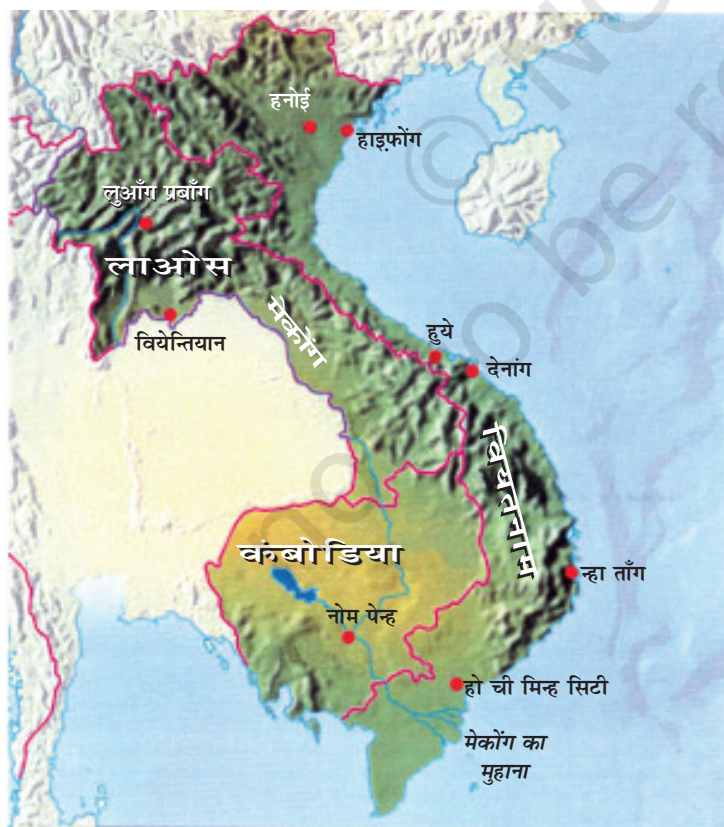


इंडो-चाइना में राष्ट्रवादी आंदोलन

वियतनाम को औपचारिक रूप से 1945 में यानी भारत से भी पहले आजादी मिल गई थी लेकिन वियतनाम गणराज्य की स्थापना के लिए वहाँ के लोगों को तीस साल और संघर्ष करना पड़ा। इंडो-चाइना पर केंद्रित इस अध्याय में आपको प्रायद्वीप के एक महत्वपूर्ण देश वियतनाम के बारे में जानने का मौका मिलेगा। वियतनाम में राष्ट्रवाद का उदय उस प्रकार नहीं हुआ था जिस तरह यूरोप में हुआ था। वियतनामी राष्ट्रवाद औपनिवेशिक परिस्थितियों में विकसित हुआ था। वियतनाम के विभिन्न समुदायों को मिला कर आधुनिक वियतनामी राष्ट्र की स्थापना में आंशिक रूप से उपनिवेशवाद का योगदान रहा तो दूसरी तरफ़ यह भी सच है कि इस राष्ट्र का रूप-स्वरूप औपनिवेशिक वर्चस्व के खिलाफ़ चले संघर्षों से ही तय हुआ था।

यदि आप इंडो-चाइना के ऐतिहासिक अनुभवों को भारत के अनुभवों से मिला कर देखें तो पाएँगे कि इन दोनों समाजों में औपनिवेशिक साम्राज्यों का आचरण और तौर-तरीके अलग-अलग थे। दोनों जगह उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन भी अलग-अलग तरीके से ही आगे बढ़ा। इन भिन्नताओं और समानताओं को देखते हुए आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि दुनिया के भिन्न भागों में राष्ट्रवाद कैसे-कैसे विकसित हुआ है और उसने समकालीन विश्व की रंगत-सूरत तय करने में कितनी अहम भूमिका अदा की है।



चित्र 1 - इंडो-चाइना का नक्शा।

1 चीन के साथे से आज़ादी

इंडो-चाइना तीन देशों से मिल कर बना है। ये तीन देश हैं-वियतनाम, लाओस और कंबोडिया (चित्र 1)। इस पूरे इलाके के शुरुआती इतिहास को देखने पर पता चलता है कि पहले यहाँ बहुत सारे समाज रहते थे और पूरे इलाके पर शक्तिशाली चीनी साम्राज्य का वर्चस्व था। जिसे आज उत्तरी और मध्य वियतनाम कहा जाता है जब वहाँ एक स्वतंत्र देश की स्थापना कर ली गई तो भी वहाँ के शासकों ने न केवल चीनी शासन व्यवस्था को बल्कि चीनी संस्कृति को भी अपनाए रखा।

वियतनाम उस रास्ते से भी जुड़ा रहा है जिसे समुद्री सिल्क रूट कहा जाता था। इस रास्ते से वस्तुओं, लोगों और विचारों की खूब आवाजाही चलती थी। व्यापार के अन्य रास्तों के माध्यम से वियतनाम उन दूरवर्ती इलाकों से भी जुड़ा रहता था जहाँ गैर-वियतनामी समुदाय - जैसे खमेर और कंबोडियाई समुदाय - रहते थे।



चित्र 2 - फाइफो बंदरगाह।

इस बंदरगाह की स्थापना पुर्तगाली व्यापारियों ने की थी। यह उन बंदरगाहों में से था जिनका यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ उन्नीसवीं सदी से भी काफ़ी पहले ही इस्तेमाल करने लगी थीं।

1.1 औपनिवेशिक वर्चस्व और उसका प्रतिरोध

वियतनाम पर फ़्रांसीसियों के क़ब्जे के बाद वियतनामियों की जिंदगी पूरी तरह बदल गई। जीवन के हर मोर्चे पर जनता का औपनिवेशिक शासकों के साथ टकराव होने लगा। फ़्रांसीसियों का नियंत्रण सबसे ज़्यादा तो सैनिक और आर्थिक मामलों में ही दिखाई देता था लेकिन वियतनामी संस्कृति को तहस-नहस करने के लिए भी उन्होंने सुनियोजित प्रयास किए। फ़्रांसीसियों और उनके वर्चस्व का अहसास कराने वाली हर चीज़ के खिलाफ़ वियतनामी समाज के हर तबके ने जमकर संघर्ष किया और यहीं से वियतनाम में राष्ट्रवाद के बीज पड़े।



चित्र 3 - नूयेन राजवंश के खिलाफ चढ़ाई का नेतृत्व करने वाले फ्रांसीसी अफसर फ्रांसिस गार्निए की दरबारी सिपाहियों के हाथों हत्या का दृश्य।

गार्निए उस फ्रांसीसी दल का सदस्य था जिसने मेकोंग नदी की खोज की थी। 1873 में फ्रांसीसियों ने गार्निए को उत्तर में स्थित टोंकिन प्रांत में फ्रांसीसी उपनिवेश स्थापित करने का जिम्मा सौंपा था। उसने टोंकिन की राजधानी हनोई पर हमला तो किया लेकिन इस युद्ध में वह खुद मारा गया था।

फ्रांसीसी सेना ने पहली बार 1858 में वियतनाम की धरती पर डेरा डाला। अस्सी के दशक के मध्य तक आते-आते उन्होंने देश के उत्तरी इलाक़े पर मज़बूती से क़ब्ज़ा जमा लिया। फ्रांस-चीन युद्ध के बाद उन्होंने टोंकिन और अनाम पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। 1887 में फ्रेंच इंडो-चाइना का गठन किया गया। बाद के दशकों में एक ओर फ्रांसीसी शासक वियतनाम पर अपना क़ब्ज़ा जमाते गए और दूसरी तरफ़ वियतनामियों को यह बात समझ में आने लगी कि फ्रांसीसियों के हाथों वे क्या-क्या गँवा चुके हैं। इसी सोच-विचार और जद्दोज़हद से वियतनाम में राष्ट्रवादी प्रतिरोध विकसित हुआ।



चित्र 4 - फ्रांसीसी अन्वेषण बल द्वारा तैयार किया गया मेकोंग नदी का उत्कीर्ण चित्र। इस अन्वेषण दल में गार्निए भी शामिल था।

दुनिया भर के उपनिवेशकारों ने नदियों की खोजबीन की है और उनके नक्शे बनाए हैं। औपनिवेशिक शासक इस बात को जानने का प्रयास करते थे कि कौन सी नदी कहाँ-कहाँ से होकर जाती है, उसका उद्गम स्थल क्या है और वह कैसे-कैसे भूभागों से होकर गुजरती है। इस जानकारी के आधार पर उनका व्यापार और परिवहन के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था। इन खोजी अभियानों के दौरान असंख्य नक्शे और तसवीरें बनायी जाती थीं।

मशहूर नेत्रहीन शायर न्यूयेन दिन्ह चियू (1822-88) ने अपने देश की दुर्दशा पर शोक व्यक्त करते हुए लिखा—

मैं चिर-अंधकार में जीने को तैयार हूँ,
गद्गारों का मुँह देखना मुझे मंजूर नहीं।
मुझे कोई आदमजात न दिखे, कोई बात नहीं,
किसी इनसान की पीड़ा मुझे मंजूर नहीं।
मैं कुछ न देखूँ, कोई बात नहीं,
वतन को छिन्न-भिन्न होते नहीं देख सकता।

1.2 फ्रांसीसियों को उपनिवेशों की ज़रूरत क्यों थी

एक जमाने में प्राकृतिक संसाधन हासिल करने और ज़रूरी साजो-सामान जुटाने के लिए उपनिवेश बनाना ज़रूरी माना जाता था। इसके अलावा, दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों की तरह फ्रांसीसियों को भी लगता था कि दुनिया के पिछड़े समाजों तक सभ्यता की रोशनी पहुँचाना 'विकसित' यूरोपीय राष्ट्रों का दायित्व है।

फ्रांसीसियों ने वियतनाम के मेकोंग डेल्टा इलाके में खेती बढ़ाने के लिए सबसे पहले वहाँ नहरें बनाई और जल निकासी का प्रबंध शुरू किया। सिंचाई की विशाल व्यवस्था बनाई गई। बहुत सारी नयी नहरें और भूमिगत जलधाराएँ बनाई गईं। ज्यादातर लोगों को जबरदस्ती काम पर लगा कर निर्मित की गई इस व्यवस्था से चावल के उत्पादन में वृद्धि हुई। वियतनाम दूसरे देशों को चावल का निर्यात करने लगा। 1873 में चावल की खेती केवल 2,74,000 हैक्टेयर इलाके में होती थी। 27 साल बाद, यानी सन् 1900 में यह क्षेत्रफल 11 लाख हैक्टेयर और 1930 में बढ़कर 22 लाख हैक्टेयर हो गया था। अब तक वियतनाम का दो-तिहाई चावल अंतर्राष्ट्रीय बाजार में जाने लगा था। 1931 तक वियतनाम दुनिया में चावल का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक बन चुका था।

इसी दौरान व्यापारिक वस्तुओं के आवागमन, फ़ौजी टुकड़ियों की आवाजाही और पूरे क्षेत्र पर नियंत्रण कायम करने के लिए **संरचनागत** परियोजनाओं का निर्माण शुरू कर दिया गया। पूरे इंडो-चाइना से गुजरने वाला एक विशाल रेल नेटवर्क बनाया गया। इसके माध्यम से वियतनाम के उत्तरी व दक्षिणी भाग चीन से जुड़ गए। यह रेल नेटवर्क चीन में स्थित येनान प्रांत तक जाता था। यह नेटवर्क 1910 में बन कर पूरा हुआ। उसी समय एक और लाइन बिछाई गई जिसके ज़रिए कंबोडिया की राजधानी नोम पेन्ह के रास्ते होते हुए वियतनाम को स्याम देश (उस समय थाईलैंड का यही नाम हुआ करता था) से जोड़ दिया गया।

1920 के दशक तक आते-आते फ्रांसीसी व्यवसायी अपने कारोबार में ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफ़ा कमाने के लिए वियतनाम सरकार पर इस बात के लिए और दबाव डालने लगे कि संरचनागत परियोजनाओं को और भी तेज़ी से आगे बढ़ाया जाए।

1.3 क्या उपनिवेशों का विकास करना ज़रूरी है?

इस बारे में कोई संदेह नहीं कि स्वामी राष्ट्रों के हितों को पूरा करने के लिए ही उपनिवेश बनाए जाते थे। सवाल यह है कि स्वामी राष्ट्रों के हितों को

नए शब्द

संरचनागत : ऐसी विशाल परियोजनाएँ जिनसे अर्थव्यवस्था का ढाँचा तैयार होता है। बड़ी सड़क परियोजनाएँ, रेल नेटवर्क या बिजलीघर आदि इसी तरह की परियोजनाएँ हैं।

गतिविधि

नहर परियोजना पर काम कर रहे एक वियतनामी मज़दूर और फ्रांसीसी उपनिवेशकार के बीच बातचीत की कल्पना कीजिए। फ्रांसीसी को लगता है कि वह इन पिछड़े लोगों को सभ्यता के प्रकाश में ला रहा है जबकि वियतनामी मज़दूर की दलील इसके खिलाफ़ है। कक्षा में जोड़े बनाइए और इस पाठ में दिए गए साक्ष्यों के आधार पर इस बातचीत का मंचन कीजिए।

साधने का तरीका क्या हो? प्रभावशाली लेखक और नीति-निर्माता पॉल बर्नार्ड जैसे कुछ लोगों का मानना था कि उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था का विकास करना जरूरी है। उनका कहना था कि उपनिवेश मुनाफ़ा कमाने के लिए ही बनाए जाते हैं इसलिए अगर गुलाम देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और लोगों का जीवनस्तर बेहतर होगा तो वे ज्यादा चीजें खरीदेंगे जिससे बाज़ार फैलेगा और फ़्रांसीसी व्यवसायों को फ़ायदा होगा।

बर्नार्ड ने वियतनाम की आर्थिक प्रगति को बाधित करने वाली कई बातें गिनवाई हैं। जैसे, देश की आबादी ज्यादा थी, खेती का उत्पादन स्तर कम था और किसान भारी कर्ज में डूबे हुए थे। ग्रामीण ग़रीबी कम करने और खेतिहर उत्पादन बढ़ाने के लिए यह जरूरी था कि वियतनाम में भी उसी तरह के भूमि सुधार किए जाएँ जिस तरह के सुधार जापान में 1890 के दशक में किए गए थे। लेकिन इस रास्ते पर चलते हुए यह गारंटी नहीं दी जा सकती थी कि सबको रोज़गार भी मिल जाएगा। जैसा कि जापान के अनुभवों से स्पष्ट हो चुका था, नए रोज़गार पैदा करने के लिए अर्थव्यवस्था का औद्योगीकरण करना जरूरी था।

वियतनाम की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से चावल की खेती और रबड़ के बाग़ानों पर आश्रित थी। इन पर फ़्रांस और वियतनाम के मुट्ठी भर धनी तबक़े का स्वामित्व था। इस क्षेत्र की जरूरतों को पूरा करने के लिए ही रेल और बंदरगाह की सुविधाएँ विकसित की जा रही थीं। रबड़ के बाग़ानों में वियतनामी मजदूरों से **एकतरफ़ा अनुबंध व्यवस्था** के तहत काम करवाया जाता था। बर्नार्ड की राय के विपरीत फ़्रांसीसियों ने वियतनाम की अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए कोई खास प्रयास नहीं किए। ग्रामीण इलाक़ों में ज़मींदारों का बोलबाला था और जीवनस्तर गिरता जा रहा था।

नए शब्द

एकतरफ़ा अनुबंध व्यवस्था : वियतनाम के बाग़ानों में इस तरह की मजदूरी व्यवस्था काफ़ी प्रचलित थी। इस व्यवस्था में मजदूर ऐसे अनुबंधों के तहत काम करते थे जिनमें मजदूरों को कोई अधिकार नहीं दिए जाते थे जबकि मालिकों को बेहिसाब अधिकार मिलते थे। अगर मजदूर अनुबंध की शर्तों के हिसाब से अपना काम पूरा न कर पाएँ तो मालिक उनके खिलाफ़ मुक़दमे दायर कर देते थे, उन्हें सज़ा देते थे, जेलों में डाल देते थे।



चित्र 5 - वियतनाम में एक फ़्रांसीसी हथियार सौदागर, उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में। ऐसे बहुत सारे लोग मुनाफ़ा कमाने के लिए वियतनाम में घूमते रहते थे। यह सौदागर उन लोगों में था जिन्होंने फ़्रांसीसियों को वियतनाम में अपने अड्डे खोलने के लिए तैयार किया था।

2 औपनिवेशिक शिक्षा की दुविधा

फ्रांसीसी उपनिवेशवाद सिर्फ आर्थिक शोषण पर केंद्रित नहीं था। इसके पीछे 'सभ्य' बनाने का विचार भी काम कर रहा था। जिस तरह भारत में अंग्रेज दावा करते थे उसी तरह फ्रांसीसियों का दावा था कि वे वियतनाम के लोगों को आधुनिक सभ्यता से परिचित करा रहे हैं। उनका विश्वास था कि यूरोप में सबसे विकसित सभ्यता कायम हो चुकी है। इसीलिए वे मानते थे कि उपनिवेशों में आधुनिक विचारों का प्रसार करना यूरोपियों का ही दायित्व है और इस दायित्व की पूर्ति करने के लिए अगर उन्हें स्थानीय संस्कृतियों, धर्मों व परंपराओं को भी नष्ट करना पड़े तो इसमें कोई बुराई नहीं है। वैसे भी, यूरोपीय शासक इन संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं को पुराना व बेकार मानते थे। उन्हें लगता था कि ये चीजें आधुनिक विकास को रोकती हैं।

'देशी' जनता को सभ्य बनाने के लिए शिक्षा को काफी अहम माना जाता था। लेकिन वियतनाम में शिक्षा का प्रसार करने से पहले फ्रांसीसियों को एक और दुविधा हल करनी थी। दुविधा इस बात को लेकर थी कि वियतनामियों को किस हद तक या कितनी शिक्षा दी जाए? फ्रांसीसियों को शिक्षित कामगारों की जरूरत तो थी लेकिन गुलामों को पढ़ाने-लिखाने से समस्याएँ भी पैदा हो सकती थीं। शिक्षा प्राप्त करने के बाद वियतनाम के लोग औपनिवेशिक शासन पर सवाल भी उठा सकते थे। इतना ही नहीं, वियतनाम में रहने वाले फ्रांसीसी नागरिकों (जिन्हें *कोलोन* कहा जाता था) को तो यह भी भय था कि स्थानीय लोगों में शिक्षा के प्रसार से कहीं उनके काम-धंधे और नौकरियाँ भी हाथ से न जाती रहें। इन लोगों में कोई शिक्षक, कोई दुकानदार तो कोई पुलिसवाला था। इसीलिए ये लोग वियतनामियों को पूरी फ्रांसीसी शिक्षा देने का विरोध करते थे।

2.1 आधुनिक सोच : शिक्षा की भाषा

शिक्षा के क्षेत्र में फ्रांसीसियों को एक और समस्या का सामना करना पड़ा। वियतनाम के धनी और अभिजात्य तबके के लोग चीनी संस्कृति से गहरे तौर पर प्रभावित थे। फ्रांसीसियों की सत्ता को सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए इस प्रभाव को समाप्त करना जरूरी था। फलस्वरूप, पहले उन्होंने परंपरागत शिक्षा व्यवस्था को सुनियोजित ढंग से तहस-नहस किया और फिर वियतनामियों के लिए फ्रांसीसी किस्म के स्कूल खोल दिए। लेकिन यह कोई आसान काम नहीं था। अब तक समाज के खाते-पीते तबके के लोग चीनी भाषा का इस्तेमाल करते थे जिसे हटाना जरूरी था। लेकिन उसकी जगह लेने वाली भाषा कौन सी हो? चीनी भाषा को हटा कर लोगों को वियतनामी भाषा पढ़ायी जाए या उन्हें फ्रांसीसी भाषा में शिक्षा दी जाए?

इस सवाल पर लोगों के बीच दो मत थे। कुछ नीति-निर्माता मानते थे कि फ्रांसीसी भाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। उन्हें लगता था कि फ्रांसीसी भाषा सीखने से वियतनाम के लोग फ्रांस की संस्कृति और सभ्यता से परिचित हो जाएँगे। इस प्रकार 'यूरोपीय फ्रांस के साथ मजबूती से बंधे एक एशियाई फ्रांस' की रचना करने में मदद मिलेगी। वियतनाम के शिक्षा प्राप्त लोग फ्रांसीसी भावनाओं व आदर्शों का सम्मान करने लगेंगे, फ्रांसीसी संस्कृति की श्रेष्ठता के कायल हो जाएँगे और फ्रांसीसियों के लिए लगन से काम

करने लगेंगे। बहुत सारे लोग इस बात के खिलाफ थे कि पढ़ाई के लिए केवल फ्रांसीसी भाषा को ही माध्यम बनाया जाए। उनका विचार था कि अगर छोटी कक्षाओं में वियतनामी और बड़ी कक्षाओं में फ्रांसीसी भाषा में शिक्षा दी जाए तो ज्यादा बेहतर होगा। वे तो यहाँ तक चाहते थे कि जो थोड़े से लोग फ्रांसीसी सीख लेंगे और फ्रांस की संस्कृति को अपना लेंगे उन्हें फ्रांस की नागरिकता भी प्रदान कर दी जाएगी।

लेकिन स्कूलों में दाखिला लेने की ताकत तो वियतनाम के धनी वर्ग के पास ही थी। यह देश की आबादी का एक बहुत छोटा हिस्सा था। जो स्कूल में दाखिला ले पाते थे उनमें से भी बहुत थोड़े से विद्यार्थी ही ऐसे होते थे जो सफलतापूर्वक स्कूल की पढ़ाई पूरी कर पाते थे। दरअसल बहुत सारे बच्चों को तो आखिरी साल की परीक्षा में जानबूझ कर फेल कर दिया जाता था ताकि वे अच्छी नौकरियों के लिए योग्यता प्राप्त न कर सकें। आमतौर पर दो तिहाई विद्यार्थियों को इसी तरह फेल कर दिया जाता था। 1925 में 1.7 करोड़ की आबादी में स्कूल की पढ़ाई पूरी करने वालों की संख्या 400 से भी कम थी।

स्कूली किताबों में फ्रांसीसियों का गुणगान किया जाता था और औपनिवेशिक शासन को सही ठहराया जाता था। वियतनामियों को आदिम और पिछड़ा दर्शाया जाता था जो शारीरिक श्रम तो कर सकते हैं लेकिन बौद्धिक कामों के लायक नहीं हैं; वे खेतों में काम तो कर सकते हैं लेकिन अपना शासन खुद नहीं चला सकते; वे 'माहिर नकलची' तो हैं पर उनमें रचनाशीलता नहीं है। स्कूली बच्चों को पढ़ाया जाता था कि वियतनाम में केवल फ्रांसीसी ही शांति कायम कर सकते हैं : 'जब से वियतनाम में फ्रांसीसी शासन की स्थापना हुई है, वियतनामी किसान डाकुओं के भय से आजाद हो गए हैं... चारों तरफ अमन-चैन है और किसान दिल लगा कर काम कर सकते हैं।'

2.2 आधुनिक दिखने की चाह

पश्चिमी ढंग की शिक्षा देने के लिए 1907 में टोंकिन फ्री स्कूल खोला गया था। इस शिक्षा में विज्ञान, स्वच्छता और फ्रांसीसी भाषा की कक्षाएँ भी शामिल थीं (जो शाम को लगती थीं और उनके लिए अलग से फीस ली जाती थी)। इस स्कूल की नज़र में 'आधुनिक' के क्या मायने थे इससे उस समय की सोच को अच्छी तरह समझा जा सकता है। स्कूल की राय में, सिर्फ विज्ञान और पश्चिमी विचारों की शिक्षा प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं था : आधुनिक बनने के लिए वियतनामियों को पश्चिम के लोगों जैसा ही दिखना भी पड़ेगा। इसीलिए यह स्कूल अपने छात्रों को पश्चिमी शैलियों को अपनाने के लिए उकसाता था। मसलन, बच्चों को छोटे-छोटे बाल रखने की सलाह दी जाती थी। वियतनामियों के लिए यह अपनी पहचान को पूरी तरह बदल डालने वाली बात थी। वे तो पारंपरिक रूप से लंबे ही बाल रखते थे। इस आमूल परिवर्तन का महत्व स्पष्ट करने वाला एक 'बाल-कटाई श्लोक' तक गढ़ लिया गया था—

बाएँ हाथ में कंधा थामो; दाएँ हाथ में कैची,
कच, कच, कपच, कपच; खबरदार, खयाल रखो।
वाहियात आदतें छोड़ दो; बच्चों जैसा क्यों करते हो,
मुँह खोलकर बोलो बेधड़क; पश्चिमी तौर-तरीके सीखो।

गतिविधि

कल्पना कीजिए कि 1910 में आप टोंकिन फ्री स्कूल में पढ़ रहे हैं। अब सोच कर बताइए कि

- वियतनामियों के बारे में पाठ्यपुस्तकों में जो कुछ पढ़ाया जा रहा है उसे पढ़कर आपकी क्या प्रतिक्रिया होती?
- बाल काढ़ने के बारे में जो कुछ बताया जा रहा है उसे पढ़कर आप क्या कहते?



चित्र 6 - इस व्यंग्यचित्र में ऐसे वियतनामियों का मज़ाक उड़ाया जा रहा है जो पश्चिमी रंग-ढंग में ढल गए हैं। उसने अपनी संस्कृति को छोड़ कर पश्चिमी कपड़े पहना और टेनिस खेलना भी शुरू कर दिया है।

2.3 स्कूलों में विरोध के स्वर

शिक्षकों और विद्यार्थियों ने इन पुस्तकों और पाठ्यक्रमों का आँख मूँद कर अनुसरण नहीं किया। कहीं इनका खुलकर विरोध हुआ तो कहीं लोगों ने खामोशी से प्रतिरोध दर्ज कराया। जैसे-जैसे छोटी कक्षाओं में वियतनामी शिक्षकों की संख्या बढ़ती गई, इस बात पर नियंत्रण रखना मुश्किल होता गया कि उन कक्षाओं में क्या पढ़ाया जा रहा है। बहुत सारे वियतनामी शिक्षक किताबों में लिखी बातों को चुपचाप बदल कर पढ़ाने लगते थे और जो उनमें छपा होता था उसमें मीनमेख निकालने लगते थे।

1926 में साइगॉन नेटिव गर्ल्स स्कूल में एक बड़ा आंदोलन खड़ा हो गया। विवाद तब शुरू हुआ जब एक कक्षा में अगली सीट पर बैठी वियतनामी लड़की को उठकर पिछली कतार में जाकर बैठने के लिए कह दिया गया क्योंकि अगली सीट पर एक स्थानीय फ्रांसीसी लड़की को बैठना था। वियतनामी लड़की ने सीट छोड़ने से इनकार कर दिया। स्कूल का प्रिंसिपल एक कोलोन (यानी उपनिवेशों में रहने वाले फ्रांसीसी) था। उसने लड़की को स्कूल से निकाल दिया। जब दूसरे विद्यार्थियों ने प्रिंसिपल के फैसले का विरोध किया तो उन्हें भी स्कूल से निकाल दिया गया। इसके बाद तो यह विवाद और फैल गया। लोग खुलेआम जुलूस निकालने लगे। हालात बेकाबू होने लगे तो सरकार ने आदेश दिया कि लड़की को दोबारा स्कूल में वापस ले लिया जाए। प्रिंसिपल ने लड़की को वापस दाखिला तो दे दिया लेकिन साथ ही यह ऐलान भी कर दिया कि 'मैं सारे वियतनामियों को पाँव तले कुचल कर रख दूँगा। वाह! तुम लोग मुझे वापस भिजवाना चाहते हो। अच्छी तरह गाँठ बाँध लो, जब तक एक भी वियतनामी कोचिनचाइना में बसने की जुर्रत करता रहेगा तब तक मैं यहाँ से जाने वाला नहीं हूँ।'

दूसरे इलाकों में भी छात्र-छात्राओं ने सरकार की इस चाल का जमकर विरोध किया कि वियतनामी बच्चों को सफेदपोश नौकरियों के लायक योग्यता न मिले। ये विद्यार्थी देशभक्ति की भावनाओं से प्रेरित थे। उनको विश्वास था कि शिक्षितों को समाज के भले के लिए काम करना चाहिए। उनकी इसी सोच के कारण न केवल फ्रांसीसियों के साथ बल्कि स्थानीय अभिजात्य वर्ग के साथ भी उनका टकराव बढ़ने लगा क्योंकि दोनों को ही लगता था कि इस तरह तो उनकी हैसियत और सत्ता खतरे में पड़ जाएगी। 1920 के दशक तक आते-आते छात्र-छात्राएँ राजनीतिक पार्टियाँ बनाने लगे थे। उन्होंने यंग अन्नान जैसी पार्टियों बना ली थीं और वे *अन्नानीज़ स्टूडेंट* (अन्नान के विद्यार्थी) जैसी पत्रिकाएँ निकालने लगे थे।

पाठशालाएँ राजनीतिक-सांस्कृतिक संघर्ष के अखाड़ों में तब्दील होने लगीं। शिक्षा पर नियंत्रण के माध्यम से फ्रांसीसी वियतनाम पर अपना कब्जा और मज़बूत करने की फ़िराक़ में थे। वे जनता की मूल्य-मान्यताओं, तौर-तरीकों और रवैयों को बदलने का प्रयास करने लगे ताकि लोग फ्रांसीसी सभ्यता को श्रेष्ठ और वियतनामियों को कमतर मानने लगे। दूसरी तरफ़, वियतनामी बुद्धिजीवियों को लगता था कि फ्रांसीसियों के शासन में वियतनाम न केवल अपने भूभाग पर अपना नियंत्रण खोता जा रहा है बल्कि अपनी पहचान भी गँवाता जा रहा है। उसकी संस्कृति और मूल्यों का अपमान किया जा रहा था और लोगों में राजा-प्रजा वाला भाव पैदा हो रहा था। फ्रांसीसी औपनिवेशिक शिक्षा के खिलाफ़ चल रहा संघर्ष उपनिवेशवाद के विरोध और स्वतंत्रता के हक़ में चलने वाले व्यापक संघर्ष का हिस्सा बन गया था।

कुछ महत्वपूर्ण तारीखें

1802

न्यूने राजवंश के अंतर्गत राष्ट्रीय एकीकरण के प्रतीक न्यूने आन्ह की सम्राट के रूप में ताजपोशी होती है।

1867

कोचिनचाइना (दक्षिण) फ्रांस का उपनिवेश बन जाता है।

1887

कोचिनचाइना, अन्नम, टोंकिन, कंबोडिया और बाद में लाओस को मिला कर इंडो-चाइना यूनियन की स्थापना की जाती है।

1930

हो ची मिन्ह वियतनामी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना करते हैं।

1945

वियेतमिन्ह जनविद्रोह शुरू करते हैं। बाओ दार्ई को गद्दी से हटा दिया जाता है। हो ची मिन्ह हनोई में स्वतंत्रता की घोषणा करते हैं (2 सितंबर)।

1954

दिएन बिएन फू के मोर्चे पर फ्रांसीसी सेना घुटने टेक देती है।

1961

कैनेडी दक्षिणी वियतनाम के लिए अमेरिकी सैनिक सहायता बढ़ाने का निर्णय लेते हैं।

1974

पेरिस शांति संधि।

1975 (30 अप्रैल)

एन.एल.एफ. की सैनिक टुकड़ियाँ साइगॉन में दाखिल होती हैं।

1976

वियतनाम समाजवादी गणराज्य की स्थापना होती है।

3 साफ़-सफ़ाई, बीमारी और रोज़मर्रा प्रतिरोध

उपनिवेशवाद के खिलाफ़ ऐसे राजनीतिक संघर्ष सिर्फ़ शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं चल रहे थे। बहुत सारे दूसरे संस्थानों में भी गुलाम जनता नाना प्रकार से अपने गुस्से को अभिव्यक्त कर रही थी।

3.1 हनोई पर प्लेग का हमला

आइए स्वास्थ्य और साफ़-सफ़ाई का ही उदाहरण लें। जब फ़्रांसीसियों ने एक आधुनिक वियतनाम की स्थापना का काम शुरू किया तो उन्होंने फ़ैसला लिया कि वे हनोई का भी पुनर्निर्माण करेंगे। एक नए 'आधुनिक' शहर का निर्माण करने के लिए वास्तुकला के क्षेत्र में सामने आ रहे नवीनतम विचारों और आधुनिक इंजीनियरिंग निपुणता का इस्तेमाल किया गया। 1903 में हनोई के नवनिर्मित आधुनिक भाग में ब्यूबॉनिक प्लेग की महामारी फैल गई। बहुत सारे औपनिवेशिक देशों में इस बीमारी को फैलने से रोकने के लिए जो क़दम उठाए गए उनके कारण भारी सामाजिक तनाव पैदा हुए। परंतु हनोई के हालात तो कुछ ख़ास ही थे।



चित्र 7 - आधुनिक हनोई।

हनोई के फ़्रांसीसी आबादी वाले हिस्से में इस तरह की इमारतें बनायी गई थीं।

हनोई के फ़्रांसीसी आबादी वाले हिस्से को एक खूबसूरत और साफ़-सुथरे शहर के रूप में बनाया गया था। वहाँ चौड़ी सड़कें थीं और निकासी का बढ़िया इंतज़ाम था। 'देशी' बस्ती में ऐसी कोई आधुनिक सुविधाएँ नहीं थीं। पुराने शहर का सारा कचरा और गंदा पानी सीधे नदी में बहा दिया जाता था। भारी बरसात या बाढ़ के समय तो सारी गंदगी सड़कों पर ही तैरने लगती थी। असल में प्लेग की शुरुआत ही उन चीजों से हुई थी जिनको शहर के फ़्रांसीसी भाग में स्वच्छ परिवेश बनाए रखने के लिए लगाया गया था। शहर के आधुनिक भाग में लगे विशाल सीवर आधुनिकता का प्रतीक थे। यही सीवर चूहों के पनपने के लिए भी आदर्श साबित हुए। ये सीवर चूहों की निर्बाध आवाजाही के लिए भी उचित थे। इनमें चलते हुए चूहे पूरे शहर में बेखटके घूमते थे। और इन्हीं पाइपों के रास्ते चूहे फ़्रांसीसियों के चाक-चौबंद घरों में घुसने लगे। अब क्या किया जाए?

3.2 चूहों की पकड़-धकड़

इस घुसपैठ को रोकने के लिए 1902 में चूहों को पकड़ने की मुहिम शुरू की गई। इस काम के लिए वियतनामियों को काम पर रखा गया और उन्हें हर चूहे के बदले इनाम दिया जाने लगा। हज़ारों की संख्या में चूहे पकड़े जाने लगे। उदाहरण के लिए, 30 मई को 20,000 चूहे पकड़े गए। इसके बावजूद चूहे खत्म होने का नाम ही न लेते थे। वियतनामियों को चूहों के शिकार की इस मुहिम के ज़रिए सामूहिक सौदेबाज़ी का महत्त्व समझ में आने लगा था। जो लोग सीवरों की गंदगी में घुस कर काम करते थे उन्होंने पाया कि अगर वे एकजुट हो जाएँ तो बेहतर मेहनताने के लिए सौदेबाज़ी कर सकते हैं। उन्होंने इस स्थिति से फ़ायदा उठाने के एक से एक नायाब तरीक़े भी ढूँढ़ निकाले। मज़दूरों को पैसा तब मिलता था जब वे यह साबित कर देते थे कि उन्होंने चूहे को पकड़ कर मार डाला है। सबूत के तौर पर उन्हें चूहे की पूँछ लाकर दिखानी पड़ती थी। इस प्रावधान का फ़ायदा उठाते हुए मज़दूर ज़्यादा पैसा कमाने के लिए चूहे को पकड़ कर उसकी पूँछ तो काट लेते थे पर चूहे को ज़िंदा छोड़ देते थे ताकि वे कभी ख़त्म न हों और उनको पकड़ने का सिलसिला ऐसे ही चलता रहे। कुछ लोगों ने तो पैसे कमाने के लिए बाक़ायदा चूहे पालना शुरू कर दिया था।

निर्बलों के इस प्रतिरोध और असहयोग से तंग आकर आखिरकार फ़्रांसीसियों ने चूहे के बदले पैसे देने की योजना ही बंद कर दी। लिहाज़ा, ब्यूबॉनिक प्लेग ख़त्म नहीं हुआ। न केवल 1903 में बल्कि अगले कुछ सालों तक यह बीमारी पूरे इलाक़े में फैल गई। चूहों के आतंक की यह कहानी कई मायनों में फ़्रांसीसी सत्ता की सीमा और सभ्यता प्रसार के उनके मिशन में निहित अंतर्विरोधों को सामने ला देती है। चूहे पकड़ने वालों की हरकतों से हमें पता चलता है कि वियतनाम के लोग रोज़मर्रा की जिंदगी में उपनिवेशवाद का किस-किस तरह से विरोध कर रहे थे।

चर्चा करें

1903 में फैली प्लेग की बीमारी और उस पर क़ाबू पाने के लिए जो क़दम उठाए गए उनसे स्वास्थ्य और साफ़-सफ़ाई के प्रति औपनिवेशिक फ़्रांसीसी सरकार की सोच और रवैये के बारे में क्या पता चलता है?

4 धर्म और उपनिवेशवाद-विरोध

औपनिवेशिक वर्चस्व निजी और सार्वजनिक जीवन के तमाम पहलुओं पर नियंत्रण के रूप में सामने आता था। फ्रांसीसियों ने न केवल सैनिक ताकत के सहारे वियतनाम पर कब्जा कर लिया था बल्कि वे वहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को भी पूरी तरह बदल देना चाहते थे। हालाँकि धर्म ने औपनिवेशिक शासन को मजबूती प्रदान करने में अहम भूमिका अदा की लेकिन दूसरी ओर उसने प्रतिरोध के नए-नए रास्ते भी खोल दिए थे। आइए देखें कि किस प्रकार ऐसा हुआ।

वियतनामियों के धार्मिक विश्वास बौद्ध धर्म, कन्फ्यूशियसवाद और स्थानीय रीति-रिवाजों पर आधारित थे। फ्रांसीसी मिशनरी वियतनाम में ईसाई धर्म के बीज बोने का प्रयास कर रहे थे। उन्हें वियतनामियों के धार्मिक जीवन में इस तरह का घालमेल पसंद नहीं था। उन्हें लगता था कि पराभौतिक शक्तियों को पूजने की वियतनामियों की आदत को सुधारा जाना चाहिए।

अठारहवीं सदी से ही बहुत सारे धार्मिक आंदोलन पश्चिमी शक्तियों के प्रभाव और उपस्थिति के खिलाफ जागृति फैलाने का प्रयास कर रहे थे। 1868 का स्कॉलर्स रिबोल्ट (विद्वानों का विद्रोह) फ्रांसीसी कब्जे और ईसाई धर्म के प्रसार के खिलाफ शुरुआती आंदोलनों में से था। इस आंदोलन की बागडोर

बॉक्स 1

कन्फ्यूशियस (551-479 ईसा पूर्व) एक चीनी विचारक थे जिन्होंने सदाचार, व्यवहार बुद्धि और उचित सामाजिक संबंधों को आधार बनाते हुए एक दार्शनिक व्यवस्था विकसित की थी। उनके सिद्धांतों के आधार पर लोगों को बड़े-बुजुर्गों व माता-पिता का आदर करने और उनका कहना मानने का पाठ पढ़ाया जाता था। उन्हें सिखाया जाता था कि राजा और प्रजा का संबंध वैसा ही होना चाहिए जैसा माता-पिता का अपने बच्चों के साथ होता है।



चित्र 8 - कैथलिक मिशनरी फादर बोरी को मृत्युदंड देने का चित्र।

फ्रांस में धार्मिक उन्माद फैलाने के लिए फ्रांसीसी कलाकार ऐसी तस्वीरें भी छापते थे।

शाही दरबार के अफ़सरों के हाथों में थी। ये अफ़सर कैथलिक धर्म और फ़्रांसीसी सत्ता के प्रसार से नाराज़ थे। उन्होंने नू अन और हा तिएन प्रांतों में बगावतों का नेतृत्व किया और एक हजार से ज्यादा ईसाइयों का क़त्ल कर डाला। कैथलिक मिशनरी सत्रहवीं सदी की शुरुआत से ही स्थानीय लोगों को ईसाई धर्म से जोड़ने में लगे हुए थे और अठारहवीं सदी के अंत तक आते-आते उन्होंने लगभग 3,00,000 लोगों को ईसाई बना लिया था। फ़्रांसीसियों ने 1868 के आंदोलन को तो कुचल डाला लेकिन इस बगावत ने फ़्रांसीसियों के खिलाफ़ अन्य देशभक्तों में उत्साह का संचार जरूर कर दिया।

वियतनाम के अभिजात्य चीनी भाषा और कन्फ़्यूशियसवाद की शिक्षा लेते थे। लेकिन किसानों के धार्मिक विश्वास बहुत सारी समन्वयवादी परंपराओं से जन्मे थे जिनमें बौद्ध धर्म और स्थानीय मूल्य-मान्यताओं, दोनों का सम्मिश्रण था। वियतनाम में बहुत सारे पंथ ऐसे लोगों के ज़रिए फैले थे जिनका दावा था कि उन्होंने ईश्वर की आभा देखी है। इनमें से कुछ धार्मिक आंदोलन फ़्रांसीसियों का समर्थन करते थे जबकि कुछ औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध चलने वाले आंदोलनों के पक्षधर थे।

होआ हाओ ऐसा ही एक आंदोलन था। यह आंदोलन 1939 में शुरू हुआ था। हरे-भरे मेकोंग डेल्टा इलाक़े में इसे भारी लोकप्रियता मिली। यह आंदोलन उन्नीसवीं सदी के उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों में उपजे विचारों से प्रेरित था।

होआ हाओ आंदोलन के संस्थापक का नाम था हुइन्ह फू सो। वह जादू-टोना और ग़रीबों की मदद किया करते थे। व्यर्थ खर्चों के खिलाफ़ उनके उपदेशों का लोगों में काफ़ी असर था। वह बालिका वधुओं की खरीद-फ़रोख़्त, शराब व अफ़ीम के प्रखर विरोधी थे।

फ़्रांसीसियों ने हुइन्ह फू सो के विचारों पर आधारित आंदोलन को कुचलने का कई तरह से प्रयास किया। उन्होंने फू सो को पागल घोषित कर दिया। फ़्रांसीसी उन्हें पागल बोन्ज़े कह कर बुलाते थे। सरकार ने उन्हें पागलखाने में डाल दिया था। मज़े की बात यह थी कि जिस डॉक्टर को यह जिम्मेदारी सौंपी गई कि वह फू सो को पागल घोषित करेगा वही कुछ समय में उनका अनुयायी बन गया। आखिरकार 1941 में फ़्रांसीसी डॉक्टरों ने भी मान लिया कि वह पागल नहीं हैं। इसके बाद फ़्रांसीसी सरकार ने उन्हें वियतनाम से निष्कासित करके लाओस भेज दिया। उनके बहुत सारे समर्थकों और अनुयायियों को **यातना शिविर (Concentration Camp)** में डाल दिया गया।

इस तरह के आंदोलनों का राष्ट्रवाद की मुख्यधारा के साथ अंतर्विरोधी संबंध रहता था। राजनीतिक दल ऐसे आंदोलनों से जुड़े जनसमर्थन का फ़ायदा उठाने की तो कोशिश करते थे लेकिन उनकी गतिविधियों से बेचैन भी रहते थे। राजनीतिक दलों को ऐसे समूहों पर नियंत्रण और अपना अनुशासन कायम करने में काफ़ी परेशानी महसूस होती थी; न ही वे उनके रीति-रिवाजों और व्यवहारों का समर्थन कर पाते थे।

इसके बावजूद साम्राज्यवादी भावनाओं को झकझोरने में ऐसे आंदोलनों के योगदान को कम करके नहीं आँका जा सकता।

नए शब्द

समन्वयवाद : ऐसा विश्वास जिसमें भिन्नताओं की बजाय समानताओं पर ध्यान देते हुए अलग-अलग मान्यताओं और आचारों को एक-दूसरे के साथ लाने का प्रयास किया जाता है।

यातना शिविर : एक प्रकार की जेल जिसमें क़ानूनी प्रक्रिया का पालन किए बिना ही लोगों को क़ैद में डाल दिया जाता है। इस शब्द को सुन कर गहन यातना और निर्मम अत्याचार की तसवीरें मन में कौंध जाती हैं।

5 आधुनिकीकरण की संकल्पना

फ्रांसीसी उपनिवेशवाद का विभिन्न स्तरों पर और नाना रूपों में विरोध हो रहा था। लेकिन सभी राष्ट्रवादियों के सामने सवाल एक जैसे थे। मसलन, आधुनिक होने का क्या मतलब होता है? राष्ट्रवादी किसे कहते हैं? क्या आधुनिक बनने के लिए परंपराओं को पिछड़ेपन की निशानी मानना और सभी पुराने विचारों व सामाजिक आचारों को खारिज करना जरूरी है? क्या 'पश्चिम' को ही विकास व सभ्यता का प्रतीक मानना और उसकी नक़ल करना जरूरी है?

ऐसे सवालों के जवाब कई तरह के थे। कुछ बुद्धिजीवियों का मानना था कि पश्चिम के प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिए वियतनामी परंपराओं को मज़बूत करना जरूरी है जबकि कई बुद्धिजीवियों का विचार था कि विदेशी वर्चस्व का विरोध करते हुए भी वियतनाम को पश्चिम से बहुत कुछ सीखना होगा। इन मतभेदों के कारण कई गंभीर बहसों खड़ी हुई जिन्हें आसानी से हल नहीं किया जा सकता था।

उन्नीसवीं सदी के आखिर में फ्रांसीसियों के विरोध का नेतृत्व प्रायः कन्फ्यूशियन विद्वानों-कार्यकर्ताओं के हाथों में होता था जिन्हें अपनी दुनिया बिखरती दिखाई दे रही थी। कन्फ्यूशियन परंपरा में शिक्षित फान बोई चाऊ (1867-1940) ऐसे ही एक महत्वपूर्ण राष्ट्रवादी थे। 1903 में उन्होंने रेवोल्यूशनरी सोसायटी (दुई तान होई) नामक पार्टी का गठन किया और तभी से वह उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन के एक अहम नेता बन गए थे। राजकुमार कुआंग दे इस पार्टी के मुखिया थे।

फान बोई चाऊ ने 1905 में चीनी सुधारक लियांग किचाओ (1873-1929) से योकोहामा में भेंट की। फान की सबसे प्रभावशाली पुस्तक, *द हिस्ट्री ऑफ़ द लॉस ऑफ़ वियतनाम*, लियांग की सलाह और प्रभाव में ही लिखी गई थी। वियतनाम और चीन में यह किताब खूब बिकी और उस पर एक नाटक भी खेला गया। यह किताब एक-दूसरे से जुड़े दो विचारों पर केंद्रित हैं : एक, देश की संप्रभुता का नाश, और दूसरा, दोनों देशों के अभिजात्य वर्ग को एक संस्कृति में बाँधने वाले वियतनाम-चीन संबंधों का टूटना। फान अपनी पुस्तक में इसी दोहरे नाश का विलाप करते हैं। उनके शोक का अंदाज़ वैसा ही था जैसा परंपरागत अभिजात्य तबके से निकले सुधारकों का दिखाई देता था।

अन्य राष्ट्रवादी फान बोई चाऊ के विचारों से गहरे तौर पर असहमत थे। फान चू त्रिन्ह (1871-1926) ऐसे नेताओं में प्रमुख थे। वे राजशाही/राजतंत्र के कट्टर विरोधी थे। उन्हें यह मंज़ूर नहीं था कि फ्रांसीसियों को देश से निकालने के लिए शाही दरबार या राजा की सहायता ली जाए। वह एक लोकतांत्रिक **गणराज्य** की स्थापना करना चाहते थे। पश्चिम के लोकतांत्रिक आदर्शों से प्रभावित त्रिन्ह पश्चिमी सभ्यता को पूरी तरह खारिज करने के खिलाफ़ थे। उन्हें मुक्ति के फ्रांसीसी क्रांतिकारी आदर्श तो पसंद थे लेकिन उनका आरोप था कि खुद फ्रांसीसी ही उन आदर्शों का अनुसरण नहीं कर रहे हैं। उनकी

स्रोत-क

जापान में फान बोई चाऊ और फान चू त्रिन्ह ने वियतनामी स्वतंत्रता के बारे में विचार करते हुए और अपने मतभेदों पर बहस करते हुए कुछ समय साथ बिताया था। इन चर्चाओं के बारे में फान बोई चाऊ ने लिखा था—

‘इसके बाद दस दिन से भी ज्यादा समय तक हम बार-बार बहस करते रहे और हमारे मत एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत थे। जैसे, वह (फान चू त्रिन्ह) आम अधिकारों की स्थापना के लिए राजशाही को उखाड़ फेंकना जरूरी मानते थे जबकि मेरा मानना था कि पहले हमें अपने देश को विदेशी शत्रुओं के चंगुल से बाहर निकालना होगा और स्वतंत्रता मिलने के बाद ही हम अन्य अधिकारों के बारे में बात कर सकते हैं। मैं सोचता था कि अपनी योजना में राजशाही का भी इस्तेमाल किया जाए जबकि वे इसके बिल्कुल विरुद्ध थे। उनकी योजना थी कि लोगों को राजशाही के खिलाफ़ खड़ा किया जाए और मैं इस योजना से बिल्कुल असहमत था। कहने का मतलब यह है कि उनका और मेरा लक्ष्य तो एक ही था लेकिन हमारे रास्ते काफ़ी अलग थे।’

स्रोत

चर्चा करें

फान बोई चाऊ और फान चू त्रिन्ह के विचारों में क्या समानताएँ थीं? उनके बीच किन सवालों पर मतभेद था?

नए शब्द

गणतंत्र : आम जनता की सहमति और जनप्रतिनिधित्व पर आधारित शासन व्यवस्था। राजशाही के विपरीत ऐसी सरकार लोगों की सत्ता (लोकशाही) पर आधारित होती है।

माँग थी कि फ़्रांसीसी शासक वियतनाम में वैधानिक एवं शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करें और कृषि व उद्योगों का विकास करें।

5.1 आधुनिक बनने के अन्य तरीके : जापान और चीन

प्रारंभिक वियतनामी राष्ट्रवादियों के जापान और चीन के साथ काफ़ी घनिष्ठ संबंध थे। जापान और चीन न केवल बदलाव का प्रतीक थे बल्कि फ़्रांसीसी पुलिस से बच निकलने वालों के लिए शरणस्थली भी थे। इन देशों में एशियाई क्रांतिकारियों के नेटवर्क बने हुए थे।

बीसवीं सदी के पहले दशक में 'पूरब की ओर चलो' आंदोलन काफ़ी तेज़ था। 1907-1908 में लगभग 300 वियतनामी विद्यार्थी आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए जापान गए थे। उनमें से बहुतों का सबसे बड़ा लक्ष्य यही था कि फ़्रांसीसियों को वियतनाम से निकाल बाहर किया जाए, कठपुतली सम्राट को गद्दी से हटा दिया जाए और फ़्रांसीसियों द्वारा अपमानित करके गद्दी से हटा दिए गए न्यूयेन राजवंश को दोबारा गद्दी पर बिठाया जाए। इन राष्ट्रवादियों को विदेशी हथियार और मदद लेने से कोई परहेज़ नहीं था। इसके लिए उन्होंने एशियाई होने के नाते जापानियों से मदद माँगी। जापान आधुनिकीकरण के रास्ते पर काफ़ी आगे बढ़ चुका था। जापानियों ने पश्चिम द्वारा गुलाम बनाए जाने की कोशिशों का भी सफलतापूर्वक विरोध किया था। 1907 में रूस पर विजय प्राप्त करके जापान अपनी सैनिक ताकत का भी लोहा मनवा चुका था। वियतनामी विद्यार्थियों ने टोकियो में भी रेस्टोरेशन सोसायटी की स्थापना कर ली थी लेकिन 1908 में जापानी गृह मंत्रालय ने ऐसी गतिविधियों का दमन शुरू कर दिया। फान बोई चारु सहित बहुत सारे लोगों को जापान से निकाला जाने लगा और उन्हें मजबूरन चीन व थाईलैंड में शरण लेनी पड़ी।

चीन के घटनाक्रम ने भी वियतनामी राष्ट्रवादियों के हौसले बढ़ा दिए थे। सुन यात सेन के नेतृत्व में चले आंदोलन के जरिए जनता ने लंबे समय से चीन पर शासन करते आ रहे राजवंश को 1911 में गद्दी छोड़ने पर विवश कर दिया और वहाँ गणराज्य की स्थापना की गई। इन घटनाओं से प्रेरणा लेते हुए वियतनामी विद्यार्थियों ने भी वियतनाम मुक्ति एसोसिएशन (वीयेत-नाम कुवान फुक होई) की स्थापना कर डाली। अब फ़्रांस-विरोधी स्वतंत्रता आंदोलन का स्वरूप बदल चुका था। अब इस संघर्ष का उद्देश्य यह नहीं था कि संवैधानिक राजशाही की स्थापना कैसे की जाए। अब स्वतंत्रता संग्रामी एक लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना का सपना देखने लगे थे।

लेकिन जल्दी ही वियतनाम का साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन एक नए प्रकार के नेतृत्व की देखरेख में तेज़ी से आगे बढ़ने लगा।



चित्र 9 - साम्राज्यवादियों को खदेड़ते वियतनामी राष्ट्रवादियों को दर्शाता रेखाचित्र। संघर्ष के ऐसे सभी राष्ट्रवादी चित्रों में राष्ट्रवादियों को वीरतापूर्वक आगे बढ़ते हुए, जबकि साम्राज्यवादी शक्तियों को भागते हुए दिखाया जाता था।

6 कम्युनिस्ट आंदोलन और वियतनामी राष्ट्रवाद

1930 के दशक में आई महामंदी ने वियतनाम पर भी गहरा असर डाला। रबड़ और चावल के दाम गिर गए और कृषि बढ़ने लगा। चारों तरफ बेरोजगारी और ग्रामीण विद्रोहों का बोलबाला था। न्हे अन और हा तिन्ह प्रांतों में भी ऐसे ही आंदोलन हुए। ये सबसे गरीब प्रांत थे जहाँ रैडिकल आंदोलनों की एक लंबी परंपरा चली आ रही थी जिसके कारण उन्हें वियतनाम की 'लपलपाती चिंगारी' कहा जाता था। जब भी बड़ा संकट आता था तो सबसे पहले वहीं असंतोष की ज्वाला भड़कती थी। फ्रांसीसियों ने इन बगावतों को सख्ती से कुचल डाला। यहाँ तक कि जुलूसों पर हवाई जहाजों से भी बमबारी की गई।

फरवरी 1930 में हो ची मिन्ह ने राष्ट्रवादियों के अलग-थलग समूहों और गुटों को एकजुट करके वियतनामी कम्युनिस्ट (वियतनाम काँग सान देंग) पार्टी की स्थापना की जिसे बाद में इंडो-चाइनीज़ कम्युनिस्ट पार्टी का नाम दिया गया। हो ची मिन्ह यूरोपीय कम्युनिस्ट पार्टियों के उग्र आंदोलनों से काफ़ी प्रभावित थे।

1940 में जापान ने वियतनाम पर कब्ज़ा कर लिया। जापान पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया पर कब्ज़ा करना चाहता था। ऐसे में अब राष्ट्रवादियों को फ्रांसीसियों के साथ-साथ जापानियों से भी लोहा लेना था। बाद में वियेतमिन्ह के नाम से जानी गई लीग फॉर द इंडिपेंडेस ऑफ़ वियतनाम (वियतनाम स्वतंत्रता लीग) ने जापानी कब्जे का मुँहोड़ जवाब दिया और सितंबर 1945 में हनोई को आज़ाद करा लिया। इसके बाद वियतनाम लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की गई और हो ची मिन्ह को उसका अध्यक्ष चुना गया।

6.1 वियतनाम गणराज्य

नए गणराज्य के सामने बहुत सारी चुनौतियाँ थीं। फ्रांसीसी शासक सम्राट बाओ दार्ड को कठपुतली की तरह इस्तेमाल करते हुए देश पर कब्ज़ा ज़माए रखने की कोशिश कर रहे थे। फ्रांसीसी हमले को देखते हुए वियेतमिन्ह के सदस्यों को पहाड़ी इलाकों में शरण लेनी पड़ी। आठ साल तक चली लड़ाई में आखिरकार फ्रांसीसियों को दिएन बिएन फू के मोर्चे पर मुँह की खानी पड़ी।

फ्रांसीसी सेनाओं के सर्वोच्च कमांडर जनरल हेनरी नावारे ने 1953 में ऐलान किया था कि उनकी सेना जल्दी ही विजयी होगी। लेकिन 7 मई 1954 को वियेतमिन्ह ने फ्रांसीसी एक्सपीडिशनरी कोर के बहुत सारे सैनिकों को मार गिराया और 16,000 से ज्यादा को कैद कर लिया। एक जनरल, 16 कर्नलों और 1,749 अफसरों सहित पूरे कमांडिंग दस्ते को पकड़ लिया गया।

फ्रांसीसियों की पराजय के बाद जिनेवा में चली शांति वार्ताओं में वियतनामियों को देश विभाजन का प्रस्ताव मानने के लिए बाध्य कर दिया गया। उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम, दो अलग-अलग देश बन गए। उत्तरी भाग में हो ची मिन्ह और कम्युनिस्टों की सत्ता स्थापित हुई जबकि दक्षिणी वियतनाम में बाओ डाई की सत्ता बनी रही।

स्त्रोत-ख

स्वतंत्रता की घोषणा

नए गणराज्य की उद्घोषणा में सबसे पहले 1771 में जारी किए गए संयुक्त राज्य के स्वतंत्रता घोषणापत्र और 1791 में जारी किए गए फ्रांसीसी स्वतंत्रता के घोषणापत्र के सिद्धांतों को दोहराया गया और उसके फ़ौरन बाद इस बात का उल्लेख किया गया कि फ्रांसीसी साम्राज्यवादी खुद ही अपने उन महान सिद्धांतों का पालन नहीं कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने 'हमारी पितृभूमि का अतिक्रमण किया है और हमारे सहोदर नागरिकों पर अत्याचार किए हैं। उन्होंने मानवता और न्याय के सिद्धांतों के विपरीत आचरण किया है।

'राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने हमारी सारी स्वतंत्रता छीन ली है। उन्होंने हम पर अमानवीय क़ानून लाद दिए हैं...। उन्होंने स्कूल कम और क़ैदखाने ज्यादा खोले हैं। उन्होंने हमारे देशभक्तों का बेरहमी से खून बहाया है; उन्होंने हमारे संघर्षों को खून की नदियों में डुबो दिया है।

'उन्होंने जनमत का गला घोट दिया है; उन्होंने हमारे लोगों को गुमराह करने के लिए दकियानूसी विचारों का सहारा लिया है...।

'इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुए प्रांतीय सरकार के सदस्य हम लोग वियतनाम की पूरी जनता का प्रतिनिधित्व करते हुए घोषणा करते हैं कि आगे से साम्राज्यवादी फ्रांस के साथ हमारा कोई संबंध नहीं रहेगा; हम उन सारे विशेषाधिकारों को तत्क्षण समाप्त करते हैं जो फ्रांसीसियों ने हमारे भूक्षेत्र पर कब्ज़ा लिए थे...।

'हम पूरे विश्व को औपचारिक रूप से बताना चाहते हैं कि वियतनाम को मुक्ति और स्वतंत्रता का पूरा अधिकार है और अब वियतनाम एक स्वतंत्र, स्वाधीन देश बन चुका है।'

स्त्रोत

इस बँटवारे से पूरा वियतनाम युद्ध के मोर्चे में तब्दील होकर रह गया। देश के अपने ही लोगों और पर्यावरण की तबाही होने लगी। कुछ समय बाद न्गो दिन्ह दिएम के नेतृत्व में हुए तख्तापलट में बाओ डार्ड को गद्दी से हटा दिया गया। इसके बाद दिएम की अगुवाई में एक और दमनकारी व निरंकुश शासन की स्थापना हुई। उसका विरोध करने वालों को कम्युनिस्ट कहकर जेल में डाल दिया जाता था या मार दिया जाता था। दिएम ने अध्यादेश 10 को भी नहीं हटाया जिसमें ईसाई धर्म को तो मान्यता दी गई थी लेकिन बौद्ध धर्म को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया था। उसके तानाशाही शासन के खिलाफ नेशनल लिबरेशन फ्रंट (एन.एल.एफ.) के नाम से एक व्यापक मोर्चा बनाया गया।

उत्तरी वियतनाम में हो ची मिन्ह के नेतृत्व वाली सरकार की सहायता से एन.एल.एफ. ने देश के एकीकरण के लिए आवाज उठाई। अमेरिका इस गठबंधन की बढ़ती ताकत और उसके प्रस्तावों से भयभीत था। कहीं पूरे वियतनाम पर कम्युनिस्टों का कब्जा न हो जाए, इस भय से अमेरिका ने अपनी फ़ौजें और गोला-बारूद वियतनाम में तैनात करना शुरू कर दिया। अमेरिका इस खतरे से सख्ती से निपटना चाहता था।



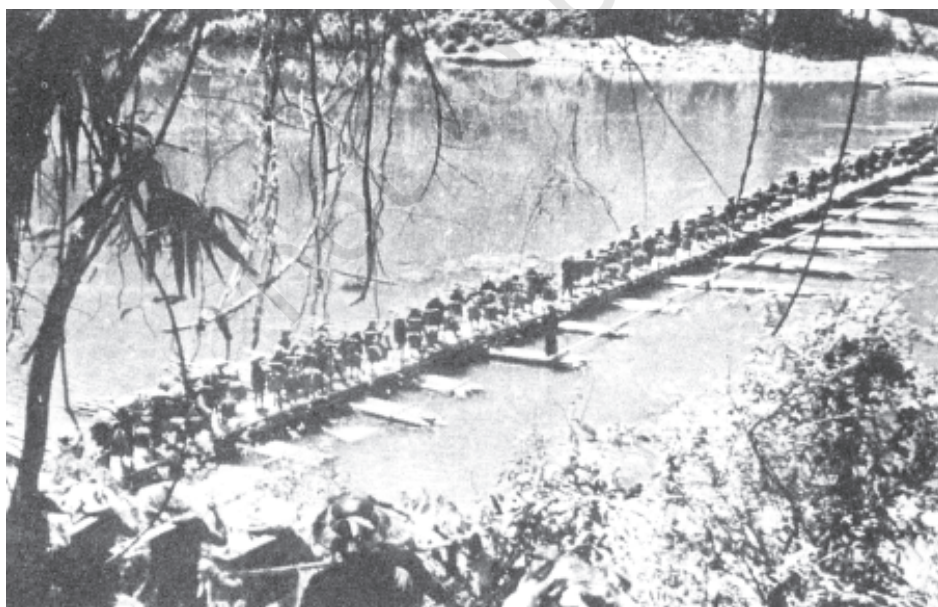
चित्र 10 - इंडो-चाइना में फ़्रांसीसी कमांडर जनरल हेनरी नवारे (दाएँ)। नवारे वियेतमिन्ह के दूरदराज ठिकानों पर भी हमला करना चाहता था। उसकी इस रणनीति का नतीजा यह हुआ कि फ़्रांसीसियों ने एक साथ कई मोर्चे खोल दिए और उनकी सेना जगह-जगह बिखर गई। नवारे की योजना दिऐन बिऐन फू स्थित पूर्वोत्तर घाटी में उलटी पड़ गई और फ़्रांसीसियों को हार का मुँह देखना पड़ा।

बॉक्स 2

दिऐन बिऐन फू में जनरल वो न्यूयेन ग्याप के नेतृत्व वाली वियेतमिन्ह टुकड़ियों ने फ़्रांसीसियों को नाकों चने चबवा दिए। फ़्रांसीसी जनरल नवारे को पूरा अंदाज़ा नहीं था कि युद्ध के मोर्चे पर उसकी सेनाओं को किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। जिस घाटी में फ़्रांसीसी टुकड़ियों ने डेरा डाला हुआ था वहाँ बरसात के महीनों में पानी भर गया। यह जगह चारों तरफ़ से झाड़ियों से घिरी हुई थी जिसकी वजह से न तो सिपाही और न ही टैंक वहाँ से आगे बढ़ सकते थे। इसी कारण फ़्रांसीसी सैनिक जंगल में छिपी वियेतमिन्ह विमानभेदी तोपों का भी पता नहीं लगा सकते थे।

वियेतमिन्ह के जवान पहाड़ियों के उपर थे। उन्होंने नीचे घाटी में तैनात फ़्रांसीसियों को चारों तरफ़ से घेर लिया और आगे बढ़ने के लिए गुप्त खंदकें और गुफ़ाएँ बना लीं ताकि कोई उनकी टोह न ले सके और वे चुपचाप आगे बढ़ते रहें। फ़्रांसीसी टुकड़ियों को न तो रसद मिल पा रही थी न घायलों को बाहर ले जाया जा सकता था। लगातार गोलाबारी के कारण फ़्रांसीसी हवाई पट्टियाँ भी किसी काम की नहीं रह गई थीं।

दिऐन बिऐन फू का मोर्चा संघर्ष का एक अप्रतिम प्रतीक बन चुका था। इस मोर्चे ने वियेतमिन्ह के इस विश्वास को और बल दिया कि वे अपनी दृढ़निष्ठा और सही रणनीति के सहारे ताकतवर साम्राज्यवादी दुश्मनों को भी धूल चटा सकते हैं। लोगों में जोश भरने के लिए इस संघर्ष की कहानियों को गाँव-गाँव में सुनाया जाता था।



चित्र 11 - दिऐन बिऐन फू को ले जाई जा रही रसद।

वियेतमिन्ह के लड़ाकों ने सैनिकों के वास्ते ज़रूरी सामान पहुँचाने के लिए साइकिलों और कुलियों की मदद ली। दुश्मन के हमलों से बचने के लिए वे जंगल और गुप्त रास्तों से छिपते-छिपाते अपनी मंज़िल तक पहुँच जाते थे।

हो ची मिन्ह (1890-1969)

हो ची मिन्ह की शुरुआती जिंदगी के बारे में ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है क्योंकि वह अपनी निजी पृष्ठभूमि के बारे में बहुत बात नहीं करते थे। उन्होंने खुद को वियतनाम की आजादी के लिए झोंक दिया था। उनका जन्म मध्य वियतनाम में हुआ और उनका असली नाम संभवतः न्यूयेन वान थान्ह था। हो ने भी उन्हीं फ्रांसीसी स्कूलों में शिक्षा पाई थी जिनसे नो दिन्ह दिएम, वो न्यूयेन ग्याप, और फान वान देंग जैसे नेता निकले थे। 1910 में कुछ समय के लिए उन्होंने बच्चों को पढ़ाया। 1911 में उन्होंने बेकिंग सीखी और साइगॉन से मार्सेई जाने वाले फ्रांसीसी जहाज पर नौकरी कर ली। बाद में हो कॉमिन्टर्न के सक्रिय सदस्य बन गए और लेनिन व अन्य नेताओं से मिले। यूरोप, थाईलैंड और चीन में 30 साल बिताने के बाद मई 1941 में वह वियतनाम लौट आए। 1943 में उन्होंने अपना नाम बदल कर हो ची मिन्ह (पथप्रदर्शक) रख लिया। जब वियतनाम लोक गणराज्य की स्थापना हुई तो उन्हें राष्ट्रपति चुना गया। 3 सितंबर 1969 को हो ची मिन्ह की मृत्यु हो गई। उन्होंने वियतनाम की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते हुए 40 साल से भी ज्यादा समय तक पार्टी का नेतृत्व किया।

6.2 युद्ध में अमेरिका का प्रवेश

अमेरिका के भी युद्ध में कूद पड़ने से वियतनाम में एक नया दौर शुरू हुआ जो वियतनामियों के साथ-साथ अमेरिकीयों के लिए भी बहुत महंगा साबित हुआ। 1965 से 1972 के बीच अमेरिका के 34,03,100 सैनिकों ने वियतनाम में काम किया जिनमें से 7,484 महिलाएँ थीं। हालाँकि अमेरिका के पास एक से बढ़कर एक आधुनिक साधन और बेहतरीन चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध थीं फिर भी उसके बहुत सारे सैनिक मारे गए। लगभग 47,244 सैनिक मारे गए और 3,03,704 घायल हुए। (घायलों में से 23,014 को भूतपूर्व सैनिक प्रशासन ने स्थायी रूप से अपंग घोषित कर दिया।)



चित्र 12 - वियेतकाँग सिपाहियों की तलाश करते अमेरिकी सैनिक।

अमेरिका के साथ संघर्ष का यह दौर काफ़ी यातनापूर्ण और निर्मम रहा। इस युद्ध में बड़े-बड़े हथियारों और टैंकों से लैस हज़ारों अमेरिकी सैनिक वियतनाम में झोंक दिए गए थे। उनके पास बी-52 बमवर्षक विमान भी मौजूद थे जिन्हें उस समय दुनिया का सबसे खतरनाक युद्धक विमान माना जाता था। चौतरफ़ा हमलों और रासायनिक हथियारों के बेतहाशा इस्तेमाल से असंख्य गाँव नष्ट हो गए और विशाल जंगल तहस-नहस कर दिए गए। अमेरिकी फ़ौजों ने **नापाम**, एजेंट ऑरेंज और फ़ॉस्फ़ोरस बम जैसे घातक रासायनिक हथियारों का जमकर इस्तेमाल किया। इन हमलों में असंख्य साधारण नागरिक मारे गए।

युद्ध का असर अमेरिका में भी साफ़ महसूस किया जा सकता था। वहाँ के बहुत सारे लोग इस बात के लिए सरकार का विरोध कर रहे थे कि उसने देश की फ़ौजों को एक ऐसे युद्ध में झोंक दिया है जिसे किसी भी हालत में जीता नहीं जा सकता। जब युवाओं को भी सेना में भर्ती किया जाने लगा तो लोगों का गुस्सा और बढ़ गया। पर विश्वविद्यालयी स्नातकों को अनिवार्य सैनिक सेवा से मुक्त रखा गया था। इसका अर्थ है कि जिन्हें मोर्चे पर भेजा जा रहा था उनमें से बहुत सारे नौजवान समाज के अभिजात्य वर्ग के नहीं थे इसलिए सरकार को उनसे कोई हमदर्दी नहीं थी। मोर्चे पर भेजे जाने वालों में ज्यादातर अल्पसंख्यक और गरीब मेहनतकशों के बच्चे थे।

इस युद्ध के प्रति समर्थन और विरोध के स्वरों को बुलंद करने में अमेरिकी मीडिया और फिल्मों ने भी एक अहम भूमिका अदा की थी। हॉलीवुड में युद्ध के समर्थन में कई फिल्में बनीं। 1968 में जॉन वेन की फिल्म *ग्रीन बरेट्स* इसी प्रकार की फिल्म थी। बहुत सारे लोगों ने इस बात को रेखांकित किया है कि यह एक तर्कहीन प्रोपेगंडा यानी प्रचार-केन्द्रित फिल्म थी जिसने बहुत सारे युवाओं को युद्ध में अपनी जान गँवाने के लिए उकसाया। कई फिल्में इस युद्ध के बारे में सरकार की नीति का विरोध करती नज़र आती थीं। उनमें इस युद्ध के कारणों की तफ़्तीश करने का प्रयास किया जाता था। अमेरिका में इस युद्ध से कितना भ्रम पैदा हुआ था इस बात को जॉन फोर्ड कपोला की फिल्म *एपोकैलिप्स नाऊ* (1979) से अच्छी तरह समझा जा सकता है।

यह युद्ध इसलिए शुरू हुआ था क्योंकि अमेरिकी नीति निर्माता इस बात को लेकर चिंतित थे कि अगर हो ची मिन्ह की सरकार अपनी योजनाओं में कामयाब हो गई तो आसपास के दूसरे देशों में भी कम्युनिस्ट सरकारें स्थापित हो जाएँगी। पर उन्हें इस बात का अंदाज़ा ही नहीं था कि राष्ट्रवाद की शक्ति और ऊर्जा से लैस लोग किस हद तक जा सकते हैं, अपने घर-बार को त्याग कर कैसी भयानक परिस्थितियों में रह सकते हैं और अपनी आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ सकते हैं। वे दुनिया के सबसे विकसित और आधुनिक तकनीक से सुसज्जित

बॉक्स 4

एजेंट ऑरेंज : घातक ज़हर

एजेंट ऑरेंज एक ऐसा ज़हर है जिसके छिड़काव से पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं और पौधे मर जाते हैं। उसे यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि उसे जिन ड्रमों में रखा जाता था उन पर नारंगी (यानी ऑरेंज) रंग की पट्टियाँ बनी होती थीं। 1961 से 1971 के बीच अमेरिकी फ़ौजों के मालवाही विमानों ने वियतनाम पर लगभग 1.1 करोड़ गैलन एजेंट ऑरेंज का छिड़काव किया था। अमेरिकी जनरल वियतनाम के जंगलों और खेतों को तबाह कर देना चाहते थे ताकि वियतनामी सैनिक जंगलों में न छिप सकें और उन्हें आसानी से खत्म किया जा सके। इस ज़हर के कारण देश की 14 प्रतिशत से ज्यादा खेतिहर ज़मीन पर बहुत बुरा असर पड़ा। वहाँ के लोग अभी भी इसके प्रभावों से पूरी तरह आज़ाद नहीं हो पाए हैं। एजेंट ऑरेंज में इस्तेमाल होने वाला डायोक्सीन नामक पदार्थ कैंसर को जन्म देता है और बच्चों के मस्तिष्क को भारी नुकसान पहुँचाता है। एक अध्ययन के अनुसार, जिन इलाकों में इसका छिड़काव किया गया था वहाँ जन्मजात विकलांगता की भारी समस्या के पीछे एजेंट ऑरेंज का ही हाथ रहा है।

वियतनाम में अमेरिकी हमले के दौरान जितने बमों और रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल किया गया उनकी मात्रा दूसरे विश्वयुद्ध में इस्तेमाल किए गए हथियारों की मात्रा से भी ज्यादा थी। इन हथियारों को अधिकतर नागरिक आबादियों पर इस्तेमाल किया गया।



चित्र 13 – दिसंबर 1972 में हनोई पर बमबारी की गई।

नए शब्द

नापाम : अग्नि बमों के लिए गैसोलीन को फुलाने में इस्तेमाल होने वाला एक ऑर्गेनिक कंपाउंड। यह मिश्रण धीरे-धीरे जलता है और मानव त्वचा जैसी किसी भी सतह के संपर्क में आने पर उससे चिपक जाता है और जलता रहता है। अमेरिका में विकसित किए गए इस रसायन का दूसरे विश्व युद्ध में प्रयोग किया गया था। भारी अंतर्राष्ट्रीय विरोध के बावजूद इसका वियतनाम में भी बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया।

देश का मुकाबला करने के लिए तैयार एक छोटे से देश की ताकत को बहुत कम करके आँक रहे थे।

6.3 हो ची मिन्ह भूलभुलैया मार्ग

हो ची मिन्ह मार्ग को देखने पर इस बात को अच्छी तरह समझा जा सकता है कि वियतनामियों ने अमेरिका के विरुद्ध किस तरह लोहा लिया। इससे यह भी पता चलता है कि वियतनाम के लोग अपने सीमित संसाधनों का भी कितनी सूझबूझ से इस्तेमाल करना जानते थे। फुटपाथों और सड़कों के इस विशाल नेटवर्क के जरिए देश के उत्तर से दक्षिण की ओर सैनिक व रसद भेजी जाती थी। पचास के दशक के आखिर में इस मार्ग को काफ़ी बेहतर बना दिया गया था और 1967 के बाद हर महीने लगभग 20,000 उत्तरी वियतनामी सैनिक इसी रास्ते से होते हुए दक्षिणी वियतनाम पहुँचने लगे थे।

इस मार्ग पर जगह-जगह छोटे-छोटे सैनिक अड्डे और अस्पताल बने हुए थे। कुछ इलाकों में माल ढुलाई के लिए ट्रकों का इस्तेमाल भी किया जाता था लेकिन ज्यादातर यह काम कुली करते थे जिनमें ज्यादातर औरतें होती थीं। इस तरह के कुली औरत-मर्द लगभग 25 किलो सामान पीठ पर या लगभग 70 किलो सामान साइकिलों पर लेकर निकल जाते थे।

इस मार्ग का ज्यादातर हिस्सा वियतनाम के बाहर लाओस और कंबोडिया में पड़ता था और उसके कई सिरे दक्षिणी वियतनाम में पहुँच जाते थे। अमेरिकी टुकड़ियों ने वियतनामी सैनिकों के लिए रसद की आपूर्ति को बंद करने के लिए इस मार्ग पर कई बार बम बरसाए। पर बेहिसाब बमबारी के बावजूद वे इस सप्लाई लाइन को ध्वस्त नहीं कर पाए। अमेरिकी इस मार्ग को इसलिए नहीं तोड़ पाए क्योंकि वहाँ के लोग हर हमले के बाद उसकी फ़ौरन मरम्मत कर लेते थे।



चित्र 14 - हो ची मिन्ह भूलभुलैया मार्ग।

ध्यान से देखें कि यह रास्ता लाओस और कंबोडिया से होकर जाता है।



चित्र 15 - टूटी सड़कों की मरम्मत।

बमबारी से ध्वस्त होने वाली सड़कों को फटाफट दुरुस्त कर लिया जाता था।



चित्र 16 - हो ची मिन्ह भूलभुलैया मार्ग।

स्त्रोत-ग

श्री दो साम के पत्र

दो साम वियतनामी तोपखाना रेजीमेंट में कर्नल थे। वह उत्तरी व दक्षिणी वियतनाम के एकीकरण और अमेरिका से युद्ध जीतने के लिए 1968 में शुरू किए गए टेट आक्रमण में शामिल थे। नीचे उनके पत्रों के कुछ अंश दिए गए हैं। ये पत्र उन्होंने युद्ध के मोर्चे से अपनी पत्नी को लिखे थे। इन पत्रों से पता चलता है कि राष्ट्रवादी कल्पना में व्यक्तिगत प्रेम, राष्ट्र प्रेम और स्वतंत्रता की चाह किस तरह एक-दूसरे में समा जाती हैं। सुख के लिए त्याग जरूरी लगने लगता है।

जून 1968 (पहला पत्र)

‘तुम पूछती हो कि जब “तुम मेरे बारे में सोचते हो तो तुम्हें सबसे ज्यादा किस बात की याद आती है?” मुझे अपनी शादी का वो माहौल याद आता है...। मुझे हमारा छोटा सा आरामदेह कमरा याद आता है जिससे हमारी बहुत सारी स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं...। मुझे याद आती है...।

‘हमारी शादी के फ़ौरन बाद मुझे देश के तटीय इलाक़ों की रक्षा के लिए फिर मोर्चे की ओर रवाना होना पड़ा। दक्षिण में स्थायी रूप से पड़ाव डालने के पहले हमें कितना थोड़ा समय मिला था साथ रहने का। मैं जितना सोचता हूँ, उतना ही तुम्हें महसूस करने लगता हूँ; हमारे जैसे लाचार जोड़ों की जिंदगी में खुशियाँ लाने के लिए मुझे और संकल्प से अपने देश की रक्षा करनी होगी...।

‘पिछली रात हमारी गाड़ी लगातार दक्षिण की ओर बढ़ती रही। आज सुबह मैं एक चट्टान पर बैठ कर तुम्हें यह खत लिख रहा हूँ। यहाँ चारों तरफ़ जलधाराओं का शोर और पेड़ों की सरसराहटें हैं। मानो कुदरत भी हमारी खुशी में शामिल हो गई है। मुझे उस क्षण की प्रतीक्षा है जब हम विजयी होकर लौटेंगे। तब हमारा जीवन और भी ज्यादा खुशियों से भरा होगा, है ना? तुम्हारी सेहत की दुआ करता हूँ, मुझे भूलना नहीं...।’

जून 1968 (दूसरा पत्र)

‘हालाँकि तुम हमेशा मेरे ख़यालों में रहती हो लेकिन मुझे तो अपना सारा ध्यान बस हमारे देश के संघर्ष में विजय प्राप्ति पर ही केन्द्रित करना होगा...।

‘मैंने अपने आप से वादा किया है कि जब दक्षिण पूरी तरह मुक्त हो जाएगा और हमारे लोग दोबारा अमन-चैन और सुख का जीवन पा लेंगे तभी मैं अपने और तुम्हारे सुख के बारे में सोचूँगा, केवल तभी मैं अपने पारिवारिक जीवन में संतोष से रह सकूँगा...।’

हुंग, डाँग वुओंग, वियतनाम युद्ध के दौरान लिए लिखे गए पत्र, वियतनामी लेखक संगठन, 2005

स्त्रोत

7 राष्ट्र और उसके नायक

सामाजिक आंदोलनों को देखने का एक पैमाना यह होता है कि उससे समाज के विभिन्न तबकों पर क्या असर पड़ता है। आइए देखें कि वियतनाम के साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन में औरतों की क्या भूमिका रही और इससे राष्ट्रवादी विचारधारा के बारे में हमें क्या पता चलता है।

7.1 विद्रोही औरतें

पारंपरिक रूप से चीन के मुकाबले वियतनाम में औरतों को ज्यादा बराबरी वाला दर्जा मिलता था, खासतौर से निचले तबके में। फिर भी औरतों की स्थिति पुरुषों के मुकाबले कमजोर तो थी ही। वे अपने भविष्य के बारे में अहम फैसले नहीं ले सकती थीं। न ही सार्वजनिक जीवन में उनका कोई खास दखल होता था।

जैसे-जैसे वियतनाम में राष्ट्रवादी आंदोलन जोर पकड़ने लगा समाज में महिलाओं की हैसियत व स्थिति पर भी सवाल उठने लगे और स्त्रीत्व की एक नयी छवि सामने आने लगी। साहित्यकार और राजनीतिक विचारक विद्रोहों में हिस्सा लेने वाली महिलाओं को आदर्श के रूप में पेश करने लगे। 1930 में न्हात लिन्ह द्वारा लिखे गए एक प्रसिद्ध उपन्यास से वियतनाम में काफी विवाद पैदा हो गया। इस उपन्यास की नायिका एक ऐसे व्यक्ति के साथ रहने से इनकार कर देती है जिसके साथ जबरन उसका विवाह कर दिया गया था। उसे छोड़ कर अपनी पसंद के किसी और व्यक्ति से विवाह कर लेती है। यह व्यक्ति राष्ट्रवादी आंदोलन में सक्रिय है। यह सोच सामाजिक रीति-रिवाजों और परंपराओं के विरुद्ध एक बगावत थी। यह इस बात का संकेत था कि वियतनामी समाज में औरत अब एक नयी सोच के साथ आगे बढ़ना चाहती है।

7.2 गुज़रे ज़माने के नायक

पुराने ज़माने की विद्रोही औरतों का भी महिमामंडन किया जाने लगा। 1913 में राष्ट्रवादी नेता फान बोई चारु ने 39-43 ईस्वी में चीनी कब्जे के विरुद्ध युद्ध छेड़ने वाली ट्रंग बहनों के जीवन पर एक नाटक लिखा। इस नाटक में उन्होंने दिखाया कि इन बहनों ने वियतनामी राष्ट्र को चीनियों से मुक्त कराने के लिए देशभक्ति के भाव से कैसे-कैसे कारनामे किए थे। उनकी बगावत की असली वजह क्या थी इस बारे में बहुत सारे विचारकों की राय भिन्न रही है लेकिन फान के नाटक के बाद उनको आदर्श के रूप में पेश किया जाने लगा और उनका गुणगान किया जाने लगा। वियतनामियों की अपराजेय इच्छाशक्ति और गहन देशभक्ति के प्रतीक के रूप में पेंटिंग्स, नाटकों और उपन्यासों में उनका महिमामंडन होने लगा। बताया जाता है कि ट्रंग बहनों ने 30,000 सैनिकों की फौज जुटा ली थी, उन्होंने चीनियों का दो साल तक मुकाबला किया और अंत में जब उन्हें अपनी पराजय निश्चित दिखाई देने लगी तो शत्रु के सामने आत्मसमर्पण करने की बजाय उन्होंने खुदकुशी कर ली।

अतीत की अन्य विद्रोहिणियाँ भी व्यापक राष्ट्रवादी आख्यान का हिस्सा थीं। इनमें त्रियू अयू सबसे महत्वपूर्ण और सम्मानित रही हैं। तीसरी सदी में पैदा होने वाली त्रियू बचपन में ही यतीम हो गई थीं। माँ-बाप के मरने के बाद



चित्र 17 - त्रियू अयू का चित्र जिसकी पूजा की जाती है। चीनी शासन का विरोध करने वाले विद्रोहियों की आज भी पूजा की जाती है।

वह अपने भाई के साथ रहने लगीं। बड़ी होने पर उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और जंगलों में चली गईं। वहाँ रहकर उन्होंने एक विशाल सेना का गठन किया और चीनियों के वर्चस्व को चुनौती दी। इस संघर्ष के अंत में जब उनकी सेना हार गई तो उन्होंने पानी में डूब कर अपनी जान दे दी थी। वियतनामियों के लिए वह देश के मान की रक्षा करते हुए जान देने वाली शहीद ही नहीं बल्कि एक देवी बन गई थीं। लोगों को साहसपूर्वक आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए राष्ट्रवादियों ने उनकी छवि का खूब प्रचार किया।

7.3 योद्धा औरतें

1960 के दशक के पत्र-पत्रिकाओं में दुश्मन से लोहा लेती योद्धा औरतों की तस्वीरें बड़ी संख्या में छपने लगीं। इन तस्वीरों में स्थानीय प्रहरी दस्ते की औरतों को हवाई जहाजों को मार गिराते हुए दर्शाया जाता था। उनको युवा, बहादुर और समर्पित योद्धाओं के रूप में चित्रित किया जाता था। इस बारे में कहानियाँ छपने लगीं कि सेना में शामिल होने और राइफल उठाने का मौका मिलने से वे कितना खुश महसूस करती हैं। कुछ कहानियों में बताया जाता था कि किस अप्रतिम वीरता का परिचय देते हुए किसी महिला सैनिक ने अकेले ही शत्रुओं को मार गिराया। न्यूयेन थी शुआन नामक महिला के बारे में बताया जाता था कि उसके पास केवल 20 गोलियाँ थीं लेकिन इन्हीं के सहारे उसने एक जेट विमान को मार गिराया था।

औरतों को सिर्फ योद्धा के रूप में ही नहीं बल्कि कामगारों के रूप में भी पेश किया जा रहा था। बहुत सारी तस्वीरों में औरतों को एक हाथ में राइफल और दूसरे हाथ में हथौड़ा लिए दिखाया जाता था। चाहे बूढ़ी हों या जवान, औरतों को निस्वार्थ भाव से देश रक्षा के लिए समर्पित नागरिकों के रूप में पेश किया जाने लगा था। जब साठ के दशक में बड़ी संख्या में सैनिक मारे जाने लगे तो औरतों से भी ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में सेना में भर्ती होने का आह्वान किया गया।

बहुत सारी औरतों ने इस आह्वान को गंभीरता से लिया और वे प्रतिरोध आंदोलन में शामिल हो गईं। वे घायलों की मरहम-पट्टी करने, भूमिगत कमरे व सुरंगें बनाने और दुश्मन से मोर्चा लेने में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने लगीं। हो ची मिन्ह मार्ग पर देश के युवा वॉलंटियरों ने 2,195 किलोमीटर लंबी महत्त्वपूर्ण सड़कों पर लगातार पहरा दिया और 2,500 ठिकानों की हिफाजत की। उन्होंने छह हवाई पट्टियाँ बनाई, दसियों हज़ार बमों को बरबाद किया, हज़ारों किलोग्राम माल ढोया, हथियार व गोला-बारूद की सप्लाई जारी रखी और पंद्रह जहाजों को मार गिराया था। 1965 से 1975 के बीच इस मार्ग पर काम करने वाले युवाओं में से 70-80 प्रतिशत लड़कियाँ थीं। एक सैनिक इतिहासकार का कहना है कि वियतनाम की सेना, मिलीशिया (नागरिक सेना), स्थानीय दस्तों और पेशेवर टोलियों में 15 लाख औरतें काम करती थीं।

7.4 शांति के समय औरतें

सत्तर के दशक तक आते-आते शांति प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। युद्ध समाप्त होने के आसार दिखाई देने लगे थे। इसके बाद औरतों को योद्धाओं के रूप में पेश करने का चलन खत्म होने लगा। अब औरतों को मज़दूरों के रूप में ही ज़्यादा पेश किया जाने लगा। उन्हें सैनिकों के रूप में नहीं बल्कि कृषि कोऑपरेटिवों, कारखानों और उत्पादन इकाइयों में काम करते हुए दर्शाया जाने लगा।



चित्र 18 - एक हाथ में बंदूक।

औरतों के बारे में जिस तरह की कहानियाँ सुनने में आती थीं उनमें बताया जाता था कि औरतें भी सेना में भर्ती होने को बेताब हैं। ऐसी कहानियों में यह विवरण अक्सर आता था : 'गुलाबी गालों वाली मैं औरत भी तुम मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिला कर लड़ रही हूँ। जेल मेरी पाठशाला है, तलवार मेरा बच्चा है और बंदूक ही मेरा पति है।'



चित्र 19 - घायलों की मरहम-पट्टी करती वियतनामी महिला चिकित्सक।

8 युद्ध की समाप्ति

युद्ध के लंबा खिंचते जाने से अमेरिका में भी लोग सरकार के खिलाफ बोलने लगे थे। यह साफ दिखाई दे रहा था कि अमेरिका अपने लक्ष्य को हासिल करने में विफल रहा है। अमेरिका न तो वियतनामियों के प्रतिरोध को कुचल पाया था और न ही अमेरिकी कार्रवाई के लिए वियतनामी जनता का समर्थन प्राप्त कर पाया। इस दौरान हजारों नौजवान अमेरिकी सिपाही अपनी जान गँवा चुके थे और असंख्य वियतनामी नागरिक मारे जा चुके थे। इस युद्ध को पहला टेलिविज़न युद्ध कहा जाता है। युद्ध के दृश्य हर रोज़ समाचार कार्यक्रमों में टेलीविज़न के पर्दे पर प्रसारित किए जाते थे। अमेरिकी कुकृत्यों को देखकर बहुत सारे लोगों का अमेरिका से मोहभंग हो चुका था। मैरी मैक्कार्थी जैसे लेखक या जेन फोंडा जैसे कलाकारों ने तो उत्तरी वियतनाम का दौरा भी किया और अपने देश की रक्षा के लिए वियतनामियों द्वारा दिए गए बलिदानों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। राजनीतिक सिद्धांतकार नोम चॉम्स्की ने इस युद्ध को 'शांति के लिए, राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए भारी खतरा' बताया।

सरकारी नीति के खिलाफ व्यापक प्रतिक्रियाओं ने युद्ध खत्म करने के प्रयासों को और बल प्रदान किया। जनवरी 1974 में पेरिस में एक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते से अमेरिका के साथ चला आ रहा टकराव तो खत्म हो गया लेकिन साइगॉन शासन और एनएलएफ के बीच टकराव जारी रहा। आखिरकार 30 अप्रैल 1975 को एनएलएफ ने राष्ट्रपति के महल पर कब्ज़ा कर लिया और वियतनाम के दोनों हिस्सों को मिला कर एक राष्ट्र की स्थापना कर दी गई।



चित्र 20 - समझौते के बाद दक्षिणी वियतनाम में कैद उत्तरी वियतनामी कैदियों को रिहा किया जा रहा है।



चित्र 21 - साइगॉन को मुक्त कराने के बाद एक टैंक के ऊपर चढ़कर तसवीर खिंचवाते वियेतकाँग सिपाही। इस तसवीर से वियतनामी राष्ट्रवाद के बारे में क्या पता चलता है ?

संक्षेप में लिखें

- निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें –
 - (क) उपनिवेशकारों के 'सभ्यता मिशन' का क्या अर्थ था।
 - (ख) हुइन फू सो।
- निम्नलिखित की व्याख्या करें –
 - (क) वियतनाम के केवल एक तिहाई विद्यार्थी ही स्कूली पढ़ाई सफलतापूर्वक पूरी कर पाते थे।
 - (ख) फ्रांसीसियों ने मेकाँग डेल्टा क्षेत्र में नहरें बनवाना और ज़मीनों को सुखाना शुरू किया।
 - (ग) सरकार ने आदेश दिया कि साइगॉन नेटिव गर्ल्स स्कूल उस लड़की को वापस कक्षा में ले, जिसे स्कूल से निकाल दिया गया था।
 - (घ) हवाई के आधुनिक, नवनिर्मित इलाकों में चूहे बहुत थे।
- टोंकिन फ्री स्कूल की स्थापना के पीछे कौन से विचार थे? वियतनाम में औपनिवेशिक विचारों के लिहाज़ से यह उदाहरण कितना सटीक है?
- वियतनाम के बारे में फान यू त्रिन्ह का उद्देश्य क्या था? फान बोई चाऊ और उनके विचारों में क्या भिन्नता थी?

संक्षेप में लिखें

चर्चा करें

- इस अध्याय में आपने जो पढ़ा है, उसके हवाले से वियतनाम की संस्कृति और जीवन पर चीन के प्रभावों की चर्चा करें।
- वियतनाम में उपनिवेशवाद-विरोधी भावनाओं के विकास में धार्मिक संगठनों की भूमिका क्या थी?
- वियतनाम युद्ध में अमेरिकी हिस्सेदारी के कारणों की व्याख्या करें। अमेरिका के इस कृत्य से अमेरिका में जीवन पर क्या असर पड़े?
- अमेरिका के खिलाफ वियतनामी युद्ध का निम्नलिखित के दृष्टिकोण से मूल्यांकन कीजिए –
 - (क) हो ची मिन्ह भूलभुलैया मार्ग पर माल ढोने वाला कुली।
 - (ख) एक महिला सिपाही।
- वियतनाम में साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में महिलाओं की क्या भूमिका थी? इसकी तुलना भारतीय राष्ट्रवादी संघर्ष में महिलाओं की भूमिका से कीजिए।

चर्चा करें

परियोजना कार्य

दक्षिण अमेरिका के किसी एक देश में साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन के बारे में पता लगाएँ। कल्पना कीजिए कि इस देश का एक स्वतंत्रता सेनानी वियेतमिन्ह के एक सिपाही से मिलता है; वे दोस्त बन जाते हैं और अपने-अपने देश में स्वतंत्रता संघर्षों के अनुभवों की चर्चा करने लगते हैं। उनके बीच क्या बातचीत हो सकती है, उसे लिखें।

परियोजना कार्य